

फूड सेक्टर के प्रतिनिधियों ने खाद्य उत्पादों पर एफओपीएल चेतावनी पर दिया बल

सवेरा न्यूज/ राकेश शर्मा
चंडीगढ़, 11 अगस्त: हेल्थी फूड के प्रति उपभोक्ताओं में जागरूकता फैलाने की दिशा में कोलकाता में सम्पन्न हुई सटैटिजिक प्लानिंग मीट में चंडीगढ़ का प्रतिनिधित्व कर रहे सटिजस अवैरनेस ग्रुप और स्थानीय उद्योग के प्रतिनिधियों का मत था कि भारत में भी ग्लोबल स्टैंडर्ड के अनुरूप 'फ्रंट ऑफ पैक लैबलिंग' का अनुसरण होना आवश्यक है। सीएजी के चैरमैन सुरेन्द्र बर्मा ने बताया कि इस मीट में देश भर से फूड सेक्टर के स्टैकहोल्डर्स जुटे और इस दिशा में उद्योगे जाने वाले प्रयासों को कैसे

प्रभावी बनाया जाने, उन सभी पहलुओं पर चिंतन मंथन किया। मीट के दौरान फूड इंडस्ट्री के प्रतिनिधियों के साथ इस दिशा में प्रयासरत संगठन और एफएसएसएआई के प्रतिनिधियों की भी व्यापक भागीदारी देखने को मिली। मीट के आयोजक व कंज्यूमर यावस के सीईओ अशीम सन्याल ने बताया कि देश में अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड प्रोडक्ट्स की खपत में अभूतपूर्व स्तर तक बढ़ने के साथ भारत, एफओपीएल को अपनाने को प्राथमिकता दे रहा। भारत ने अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड एंड बैक्टेरियस की सेल और खपत में उच्चतम दर दर्ज की

है। यह प्रोडक्ट्स चीनी, नमक और एडिटिव्स में बहुत युक्त होते हैं। 2006-2019 के यूरोमीटर सेल्स डाटा के आंकड़ों के अनुसार, भारत में पैकेज्ड जंक फूड और बैक्टेरियस सेक्टर मात्र 13 सालों में ही 42 गुणा बढ़ गया है जिसकी अनदेखी खपत चिंता का कारण है। इसके विपरित सरकार फूड प्रोसेसिंग सेक्टर का रोजगार सृजन के लिये एक प्रमुख क्षेत्र के रूप में देखती है, वर्तमान में वह मार्केट 200 बिलियन डालर्स का है और भविष्य में वह 500 बिलियन डालर्स तक बढ़ने की उम्मीद है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि इस

तेजी से पनप रहे सेक्टर के लिये एफओपीएल जैसे मापदंड जल्द लागू किये जाने चाहिये जिससे की उद्योग भी प्रभावित न हो और खपतकार लोगों के उनकी हेल्थ के प्रति भी सजग रख जा सके। मीट में भाग ले रहे एसोसिएम के उपाध्यक्ष मनीश अग्रवाल का मत था कि इंडियन फूड एमएसएमई के लिये एक बड़ा लक्ष्य पारंपरिक भोजन के हेल्थी वर्जन को अपनाना है जो वैश्विक निर्यात के अनुरूप है। उनके अनुसार एफओपीएल के अनुरूप भारत, पारंपरिक खेस के लिये एक बड़ा बाजार विकसित कर सकता है।